5510
F. S

हनुमान चाली

नं० १०१९

142

~~नं० ५५~~

नं० ५५१०-च

हनुमच्चालीसा

पत्राणि ५ (पञ्च)

(संपूर्णम्)

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ ॐ श्रीरामायनमः ॐ

जयहनुमंतज्ञानगुणसागर॥ जयकपी।
शतिहुलोकउजागर॥ रामदूतअतुलित
बलधामा॥ अंजनीपुत्रपवनसुतनामा
महाबलीविक्रमबजरंगी॥ कुमति
निवारसुमतिकेसंगी॥ कंचनवरन॥।

नं १०१९-क
हनुमानचालीसा
पूर्ण

ह
१

विराजसदेसा ॥ कुंडलकानकेगहैकेसा
हस्तिवज्रअरुधजाविराजै ॥ कांधेमूंजफ ॥
जनेऊसाजे ॥ शंकरशक्तिकेसरीनंदन
तेजप्रतापमहाजगवंधन ॥ विद्यावंत ॥
निपुठअतिचातुर ॥ भक्तिकारजकरबे
कऊआतुर ॥ रामचरितसुनवेकऊरसी

या॥रामलछमनसीतामनबसीयाह
त्मवधुरसीयादिखायो॥वडेनृपयर
लेकरायो॥भीमनृपह्वोइभ्रहुरासि
ग्यो॥श्रीरामचंद्रकेकाराजसंभारे॥रघु
पतिकीनबड़बडियाई॥भरनहिंबले
प्यारोभाई॥सहसनामगुणनमराग

ह २७

यो॥ श्रीश्रप्नेम्रभ्रणमबनायो॥ तुमउप
कारहुर्यीकाकीना॥ रामिलायराज
तुमदीना॥ तुमरामेत्रविभीषनमाना।
हुवालेकपतिसभजगजाना॥ लत्पश।
माणयोजननजोभाना॥ जन्मतहूहीसब
जगजाना॥ कृदयसोंम्रभमेलोना॥ ॥

2

हि॥जननिनामकिकुश्रवरनाही॥३रज
नकाजसगलकेजीते॥सगमश्रनुग्रह
नमरेनेने॥रामझारानमरघवाराविन
श्रज्ञानेहोयमदिग्रारा॥नमरामगतरा
मकोपावे॥जन्मजन्मकेदुःखविसाँरा
वे॥समसहावसहेनमारीसरना॥न

ह २ 3

मरछककाहनेउरना॥दैत्यमूनकिछुति
कटनआवै॥महावीरजबनामसुनावै
नासैरोगहरैसमपीरा॥रजैंनिरंतरहनु म
मेंनवीरा॥संकटितेहनुमेंनछुडावै॥म
नवचकर्मजवीकोध्यावै॥हारमनोरथ
जोकोध्यावै॥अनेकहर्षिवितवनफल

पावै॥पैंहनुगमैअनापनमाराहोअसि
हुजनगउजआरा॥अधिकवेनतीकरोत
मपाही॥होरवसीलाराधननाही॥मर
नपरोदयाकरहेरो॥महावीरमैनेरोवा
रो॥पड़ेभजरंगचालीसैकामविसवेबी
स॥रोगसोगकायादहै॥भयमगारनेवि

ह्र ५

रमैरहै ॥ जोदिनप्रतिरहमैंत्रेउवरही ॥ मं
गलदिनहूनएजनकरई ॥ आदित्य ।
वारआदित्यकीअरचा ॥ धूपदीपवंदन
मेंथवारचा ॥ मिष्टअन्नधररहथ्यावै ॥ भक्ति
प्रभावहनिस्चैपावै ॥ दिनवालीनितने
मनिवाहै ॥ एकशतआठवेरअबगाहै ॥ मं

पवमहहत्तपंचमउवप्रजै॥नरपनहवन॥
होरकरलीजै॥पुनपीछेरहमेंजोय।
है॥जोजाहूमेंमखबत्यारहै॥सोसमभत॥
त्यानमनमैधरई॥उकनामत्नाऊकममव
करई॥रसहिमेंजपठरोगनिवारै॥ब्धाया।
हछिकाहिमगोरे॥कबऊननाकोदरि॥

नं. २३४

ह
य

इपरई॥ मंत्रयंत्र अरजो हनजरई॥ परम
प्रभाववंतनर सोई॥ जाकेरक्षपवनसु
नहोई॥ इति श्री हनुमान चालीसासमाप्तम

